नवम्बर

तस्मै तृणं निदधावेतद्दहेति। तदुपप्रेयाय सर्वजवेन तन्न शशाक दग्धुं स तत एव निववृते नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद्यक्षमिति॥६॥

ब्रह्म ने अग्नि के समक्ष घास का एक तिनका रख दिया और कहाह्नह्न''इस तिनके को जला दो।'' अग्निदेव पूरी शक्ति लगा कर उस तिनके की ओर बढ़े, परन्तु वह उसे न जला पाये। वह तुरन्त वहाँ से देवताओं के पास लौट आये और बोलेह्नह्न''मैं नहीं जान पाया कि यह यक्ष कौन है।''

शिक्षा जीवन का प्रशिक्षण है। इसमें नैतिकता की भूमिका प्रमुख है। नैतिक अनुशासन के बिना शिक्षा मानव-विकास के लिए घातक है तथा स्वार्थी तत्त्वों को जन्म देती है। स्वामी शिवानन्द

ॐ

ब्रह्मचर्य-साधना :

आध्यात्मिक जीवन में ब्रह्मचर्य का महत्त्व

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

ब्रह्मचर्य एक दिव्य शब्द है। यह योग का सार है। अविद्या के कारण यह विस्मृत हो चला है। ब्रह्मचर्य के महत्त्व पर हमारे महर्षियों ने बहुत बल दिया था। यह वह परम योग है जिस पर भगवान् कृष्ण गीता में बार-बार बल देते हैं। छहठे अध्याय के चौदहवें श्लोक में यह स्पष्ट कहा गया है कि ध्यान के लिए ब्रह्मचर्य- व्रत आवश्यक हैह्नह्न''**ब्रह्मचारिव्रते स्थितः।**'' सतरहवें अध्याय के चौदहवें श्लोक में वह कहते हैं कि शारीरिक तप के आवश्यक गुणों में से ब्रह्मचर्य एक है। आठवें अध्याय के ग्यारहवें श्लोक में एक अन्य कथन है कि योगी जन वेदवेत्ताओं के बतलाये हुए ध्येय को प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। यह कथन कठोपनिषद् में भी प्राप्त है।

महर्षि पतंजलि के राजयोग में भी 'यम' प्रथम सोपान है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह का अभ्यास यम है। इनमें ब्रह्मचर्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

ज्ञानयोग में भी 'यम' साधक के लिए आधार है।

महाभारत के शान्ति-पर्व में पुनः आपको मिलेगाह्नह्न''धर्म की कई शाखाएँ हैं; परन्तु 'दम' उन सबका आधार है।''

जो व्यक्ति लौकिक अथवा आध्यात्मिक जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए ब्रह्मचर्य एक अत्यावश्यक विषय है। ब्रह्मचर्य के अभाव में मनुष्य सांसारिक कार्यकलाप अथवा आध्यात्मिक साधना के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है।

विविध धर्मसंघों में ब्रह्मचर्य

प्रत्येक धर्म में युगों तक ब्रह्मचर्य पर अत्यधिक बल दिया जाता रहा है। लोक-साहित्य में आद्योपान्त यह विचार छहाया हुआ है कि दिव्य दृष्टि तथा लोकोत्तर झाँकी का यदि एकमात्र नहीं तो भी विशेषकर ब्रह्मचारी ही अधिकारी है। वेस्टरमैक इस व्याख्या के पक्षपाती हैं कि 'वीर्यपात पवित्रतानाशक है।' रियो निग्रो जनजाति के शामनों (तान्त्रिक चिकित्सकों) के लिए ब्रह्मचारी रहने का विधान है; क्योंकि उनका ऐसा विश्वास है कि यदि औषधि विवाहित व्यक्ति द्वारा दी जाये, तो वह निष्प्रभावी सिद्ध होगी।

लम्बीचस का कथन है कि यदि व्यक्ति यौन-सम्बन्ध (मैथुन) के कारण अपवित्र है, तो देवता गण उसके आवाहन को नहीं सुनते हैं। इसलाम-धर्म में मक्का की तीर्थयात्रा के समय व्यक्ति से पूर्ण ब्रह्मचर्य की अपेक्षा की जाती है। यह (ब्रह्मचर्य) यहूदी-भक्त-मण्डली के लिए सिनाई में ईश-दर्शन तथा मन्दिर में प्रवेश से पूर्व अपेक्षित है। प्राचीन भारत, मिस्र तथा यूनान में यह नियम था कि उपासक को पूजा-काल तथा पूजा से पूर्व मैथुन से अवश्य अलग रहना चाहिए।

ईसाई-धर्म में भी ब्रह्मचर्य बपतिस्मा (दीक्षा) तथा यूखारिस्त (परम प्रसाद) की तैयारी में अपेक्षित है।

श्रेष्ठतम प्रकार का ईसाई ब्रह्मचारी ही होता था। ईसाई-धर्मोपदेशक ब्रह्मचर्य की प्रशंसा किया करते थे। उनकी दृष्टि में विवाह उन लोगों के लिए गौण हितावह था, जो ब्रह्मचर्य-पालन में असमर्थ थे। यूनानी गिरजाघर के बिशप (धर्माध्यक्ष) सदा ब्रह्मचारी हुआ करते हैं; क्योंकि वे मठवासियों में से चुने जाते हैं।

कोई भी साधु किसी स्त्री के हाथ अथवा बाल पकड़ते समय दूषित विचार से उसके शरीर को स्पर्श करने के लिए नीचे झुकता है अथवा उसके शरीर के किसी-न-किसी अंग का स्पर्श करता है, तो वह अपने धर्मसंघ पर कलंक तथा अप्रतिष्ठा लाता है। वर्तमान दीक्षा का संकल्प आजीवन सभी प्रकार के मैथुनों से अलग रहना है।

जैन लोग अपने मुनियों पर यह नियम बलात् लादते हैं कि वे सभी प्रकार के यौन-सम्बन्धों से अलग रहें, स्त्री-सम्बन्धी विषयों की चर्चा न करें तथा स्त्री की आकृति का चिन्तन न करें। कामुकता की इन शब्दों में निन्दा की गयी है : ''करोड़ों दुर्गुणों में कामुकता सबसे बुरा दुर्गुण है।''

इस नियम के सहायक अन्य नियम भी हैं तथा अशुचि प्रकार के सभी कर्मों का, विशेषकर ऐसे कर्म अथवा शब्द का निषेध जो प्रमुख नियम को भंग करने की दिशा में ले जाता हो अथवा जिससे ऐसा विचार उत्पन्न हो कि नियम का कठोरता से पालन नहीं किया जा रहा था।

जिस स्थान में कोई स्त्री उपस्थित हो, भिक्षु वहाँ न सोये अथवा यदि कोई वयस्क व्यक्ति उपस्थित न हो, तो स्त्री को पाँच-छह शब्दों से अधिक शब्दों में पवित्र सिद्धान्त का उपदेश न करे अथवा यदि विशेष रूप से प्रतिनियुक्त न किया गया हो, तो संघिनियों को प्रबोधित न करे अथवा स्त्री के साथ एक ही मार्ग से यात्रा न करे। भिक्षा के लिए फेरी करते समय वह समुचित रूप से वस्त्र धारण करे तथा नीची दृष्टि किये हुए चले। वह निर्दिष्ट परिस्थितियों के अतिरिक्त किसी स्त्री से, यदि वह उससे सम्बन्धित नहीं है, तो वस्त्र स्वीकार न करे। दूषित विचार से स्त्री को स्पर्श करना अथवा उसके साथ बातचीत करना तो दूर रहा, वह उसके साथ एकान्त में बैठे भी नहीं।

बौद्धों का 'भिक्षु-संघ' परिमोख के २२७ नियमों द्वारा व्यवस्थित होता था। इनमें प्रथम चार विशेष महत्त्व के थे। इन चारों में से किसी भी एक नियम का भंग संघ से निष्कासन से सम्बन्ध था। अतः वे पराजित अथवा पराजय-सम्बन्धी कार्यों के नियम कहलाते थे।

प्रथम नियम का कथन हैह्वह्व''कोई भी भिक्षु, जिसने आत्म-प्रशिक्षण की पद्धति तथा जीवन-नियम को अपनाया है और तत्पश्चात् प्रशिक्षण से अलग नहीं हुआ है अथवा नियम के पालन में अपनी असमर्थता घोषित नहीं की हैह्वह्वकिसी प्राणी यहाँ तक कि पशु के साथ भी मैथुन करता है, तो वह पराजित हो गया है, वह अब संघ में नहीं रहा।'' 'प्रशिक्षण से अलग होना' वेश को त्याग करने, संघ से अलग होने तथा सांसारिक जीवन में वापस जाने के लिए एक पारिभाषिक शब्द था। यह कदम संघ का कोई भी सदस्य किसी समय भी उठाने को स्वतन्त्र था।

कहा जाता है कि 'चिरकुमारी-संघ' का प्रवर्तन नूमा ने किया था। वे तीस वर्ष तक अविवाहित रहती थीं। ब्रह्मचर्य-व्रत के भंग का दण्ड जीवित दफनाना था। ये कुमारियाँ अपने असाधारण प्रभाव तथा वैयक्तिक मान-मर्यादा के कारण प्रतिष्ठित थीं। उनके साथ वैसा ही सम्मान-सूचक व्यवहार किया जाता था, जैसा सम्मान सामान्यतया राज-परिवार के लोगों को दिया जाता था; इस भाँति जनपथ पर एक कर्मचारी अधिकार-चिह्न लिये हुए उनके आगे-आगे भागता था तथा सर्वोच्च दण्डाधिकारी उनको मार्ग देता था। उन्हें कभी-कभी वाहन में सवार होने की विशेष सुविधा प्राप्त थी। सार्वजनिक क्रीड़ाओं में उनके लिए सम्मान्य स्थान नियत रहता था। मृत्यूपरान्त उन्हें सम्राटों के समान ही नगर-सीमा में ही दफनाने दिया जाता था; क्योंकि वे विधि से परे होती थीं। उन्हें कृपा-दान का राजकीय विशेषाधिकार प्राप्त था; क्योंकि यदि प्राण-दण्ड के लिए ले जाया जाता हुआ कोई अपराधी उन्हें मार्ग में मिल जाता, तो उसे मुक्त कर दिया जाता था।

पेरू की 'वर्जिन्स आफ द सन' (सूर्य-कुमारियाँ), जो एक प्रकार की पुजारिनें होती थीं, के दुराचार का पता यदि चल जाता, तो उन्हें जीवित दफनाने का दण्ड दिया जाता था।

विश्व-प्रार्थना

(अनूदित)

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

विश्वास जीवन्त होना चाहिए

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

उस परम, शाश्वत, सर्वव्यापक परम सत्ता को, उस अनादि और अनन्त परब्रह्म को हम श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं, जो हमारे भीतर और बाहर भी हैं, ऊपर-नीचे, हमारे चहुँओर हैं और हमारे व्यक्तित्व के कण-कण में परिव्याप्त हैं।

क्या आप अपने कण-कण में उनकी विद्यमानता को अनुभव करते हैं? क्या आप सदैव अपने आस-पास, दायें-बायें, अपने आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, प्रत्येक स्थान पर, हर समय जो-कुछ भी आप देखते हैंह्वह्वसबमें उनकी विद्यमानता को अनुभव करते हैं? क्या आप हर वृक्ष, हर पौधे में प्रभु की दिव्य उपस्थिति को अनुभव करते हैं? प्रात: से सायं तक जिस किसी भी छहोटे या बड़े प्राणी को, जीव को आप देखते हैं, क्या उसको भगवान् के दिव्य सान्निध्य से आच्छहादित पाते हैं?

अभी इस समय भी आपमें से प्रत्येक के ऊपर वह परम सत्ता सहस्रों सूर्यों के भव्य प्रकाश से उद्भासित हो कर आपके चारों ओर व्याप्त हो रही है, क्या आप स्वयं को इस प्रकाश में देखते हैं? क्या आप इस प्रकाश में निवास कर रहे हैं? क्या आप इसी प्रकाश में चल-फिर रहे हैं। यदि नहीं, तो आपका यह विश्वास कैसा है?

क्या आप इस भाव को अपने भीतर जाग्रत करने का अक्षरश: प्रयास कर रहे हैं? हमारे पूर्वजों ने अपने गहन आन्तरिक जीवन मेंह्वह्वअपनी जिन जीवन्त अनुभूतियों की उद्घोषणा की, क्या आप उनके प्रकाश में जीवन जीने का प्रयत्न कर रहे हैं?

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये,
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्रकोटि युगधारिणे नम:।।

''उस अनन्त परम तत्त्व को हम प्रणाम करते हैं जिनके सहस्र आकार हैं, जिनके सहस्रों पैर, नेत्र, हाथ और शिर हैं।''

इन शब्दों का आपके लिए क्या अर्थ, क्या महत्त्व है? क्या ये मात्र स्वाध्याय के लिए हैं अथवा आपके लिए ये कोई विशेष सशक्त अर्थ रखते हैंह्वह्व एक ऐसा अर्थ जो प्रत्येक दिन आपके समस्त जीवन में प्रवेश कर जाता है, जब भी आप उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते, चलते-बोलते हैं, जब आप एकाकी होते हैं, या सैकड़ों लोगों से घिरे हुए होते हैं, तब भी यह आपके साथ हर क्षण, हर जगह रहता है, क्या आप अपने पूर्वज ऋषि-मुनियों के अनुभूत जीवन्त भाव को पुन: पकड़ने का प्रयास कर रहे हैं?

यदि आप यह नहीं कर रहे, तो फिर आपके आध्यात्मिक जीवन का क्या मूल्य है? तब तो यह ऐसा मृत आध्यात्मिक जीवन ही है, जिसके अनुभव में आकांक्षा की किसी जीवन्त लौ का प्रवेश नहीं है। यदि

हमारे ऋषि-मुनियों ने भव्य अनुभूतियों में प्रवेश किया है, तो उससे मुझे या आपको क्या? वह मेरी या आपकी वर्तमान अवस्था में कैसे रत्ती-भर भी परिवर्तन ला सकते हैं, जब तक कि उन्हें सक्रिय रूप से भली-भाँति हृदयंगम न कर लिया जाये, सक्रियता से अपनी चेतना का ही एक अंग न बना लिया जाये।

याज्ञवल्क्य एक जीवन्मुक्त महर्षि रहे होंगे, किन्तु यदि हम अपनी इन्द्रियों से ही बँधे हुए हैं, यदि हम अपनी इच्छहाओं, कामनाओं, लालसाओं, भावनाओं और स्मृतियों से ही जकड़े हुए हैं, तो उनके जीवन्मुक्त होने का हमारे लिए क्या अर्थ हो सकता है? हम तो अपने 'तुच्छह, क्षुद्र मैं' द्वारा संचालित जीव हैं, तब फिर 'उच्चतर श्रेष्ठ मैं' की विद्यमानता का हमारे लिए क्या प्रयोजन है? क्या मूल्य है इसका?

आपका इसके प्रति अविश्वास न हो, यह हो सकता है; किन्तु आपका विश्वास भी सजीव, जीवन्त नहीं है। यह ऐसा सप्राण विश्वास नहीं है जो आपके व्यक्तित्व का रूपान्तरण कर दे। यह ऐसा विश्वास नहीं है जो आपकी प्रत्येक गतिविधि को प्रेरित करता हो! यह आपके दैनिक जीवन को ओत-प्रोत करने वाला नहीं है। एक जीवन्त विश्वास का होना अति-आवश्यक है। प्रज्वलित अग्नि का चित्र, देखने में भले ही कितना भी वास्तविक प्रतीत होने वाला हो; किन्तु यह आपको गरमी नहीं दे सकता, यह आपके कपड़े नहीं सुखा सकता, यह अगरबत्ती को भी नहीं जला सकता। हमारी आध्यात्मिकता क्या है? एक प्रज्वलित अग्नि है, अथवा उसका बनाया गया चित्र मात्र है?

ये विचारणीय बिन्दु हैं। ये ऐसी बातें हैं जिनके विषय में आपको प्रतिदिन गहराई से सोचना चाहिए। आपकी आध्यात्मिकता की वास्तविक स्थिति क्या है? यह एक जलती हुई आग का बनाया गया चित्र मात्र ही है या कि सचमुच ऐसी जलती हुई आग है जो आपको पुनर्जीवित कर सकती है, जो आपके जड़वत्-स्तब्ध शरीर में पुनः रक्त-संचार कर सकती है।

जिनका हम प्रतिदिन उच्चारण करते हैं, उनकी ओर ध्यान देंह्न ''हे सहस्र नामरूपधारी अनन्त प्रभु, मैं आपको प्रणाम करता हूँ।'' ''आप मेरे सर्वस्व हैं।'' ''वह हमारे भीतर-बाहर सर्वत्र व्याप्त हैं।''

आप जिनका मन्त्रोच्चारण के समय वर्णन करते हैं, वह अनेक नाम-रूप कौन और क्या हैं? भगवान् को आप किस रूप में देखते हैं? क्या वह निकटतम से भी अधिक निकट हैं? श्लोक बोलना और मन्त्रोच्चारण करना बहुत अच्छा है। यह भाव जाग्रत करता है। किन्तु इनके अर्थों में गहरे उतरना और इनके भाव को आत्मसात् करना, अपने जीवन का एक अंग बना लेना, यह और भी अधिक अच्छा है। यही करना अत्यावश्यक है।

जो-कुछ भी आप पठन-पाठन या उच्चारण करते हैं, उसे आत्मसात् करें। यह आपमें नयी दृष्टि, एक नया दृष्टिकोण लाने वाला होना चाहिए। यह आपके व्यक्तित्व में एक ऐसी शक्ति के रूप में व्याप्त हो जाना चाहिए जो आपको एक दिव्य भाव, एक दिव्य दृष्टि प्रदान कर दे। यह आपके जीवन का एक जीवन्त तत्त्व हो जाना चाहिए।

प्रतिदिन निरन्तर इन स्तोत्रों, इन श्लोकों का पाठ करके इन्हें स्मरण करने का यही उद्देश्य है। मुख्य उद्देश्य यही है।

यह निश्चित रूप से आपकी अस्थियों तक में, आपके एक-एक घटक में प्रवेश कर जाना चाहिए और आपके जीवन को बदल देना चाहिए। इन्हें आपके जीवन का एक अंग बन जाना चाहिए, एक ऐसी शक्ति बन जाना चाहिए जो आपके जीवन को आगे की ओर, ऊपर की ओर, ईश्वरोन्मुखी अनुभूति और मोक्ष की ओर अग्रसर करने वाली हो। यही इनका उद्देश्य है। गहन आध्यात्मिक आदेश, जो हमें विविध ढंगों से घोषणा करते हुए बताते हैं कि यह समस्त जगत् भगवान् से ही व्याप्त है, इसके साथ आपको, अपने-आपको इसी रूप में जोड़ना चाहिए।

यह ऐसा अभी से करें। समय व्यर्थ न गँवायें। जीवन बीता जा रहा है, अन्त की ओर बढ़ रहा है। बीता समय पुनः लौट कर नहीं आता। इसे अभी समझ लें और अपने वर्तमान को, अपने सर्वोच्च भले के लिए उपयोग करके अपने भविष्य को सँवार लें।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

केवल भारत में लागू

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के सदस्यता-शुल्क की एवं शाखाओं के सम्बद्धता-शुल्क की दरें

१. नवीन सदस्यता-शुल्क	रु. १५०/-
प्रवेश-शुल्क . . . . . रु. ५०/-	
सदस्यता-शुल्क . . . . . रु. १००/-	
२. सदस्यता नवीकरण-शुल्क (वार्षिक)	रु. १००/-
३. आजीवन सदस्यता-शुल्क	रु. ३,०००/-
४. संरक्षकता-शुल्क	रु. १०,०००/-
५. नयी शाखा खोलने का शुल्क*	रु. १०००/-
प्रवेश-शुल्क . . . . . .रु. ५००/-	
सम्बद्धता-शुल्क . . . . . .रु. ५००/-	
४. शाखा-सम्बद्धता (नवीकरण) शुल्क (वार्षिक)	रु. ५००/-

* नयी शाखा खोलने के लिए मुख्यालय से लिखित अनुमति लेनी होगी।

➲ कृपया सदस्यता-शुल्क और शाखा-सम्बद्धता-शुल्क इंडियन पोस्टल आर्डर अथवा ऋषिकेश में स्थित किसी भी बैंक के नाम बने डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

➲ सदस्यता ग्रहण करने, पत्रिका भेजने एवं दि. जी. सं. से सम्बन्धित अन्य विषयों के लिए कृपया पत्रिका-विभाग/शाखा-विभाग से सम्पर्क करें। फो.नं. ०१३५-२४४२३४०

वेद २

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

'पुरुषसूक्त' में विश्व की आत्मिक एकता का अत्यन्त भव्य वर्णन मिलता है। सर्वान्तर्व्यापी एवं सर्वातिशायी रूप में सत् की प्रकृति का सर्वप्रथम सम्पूर्ण प्रस्तुतिकरण कदाचित् यहीं हुआ है। सबको घेरे हुए उस पुरुष (परमात्मा) के अनन्त शिर, अनन्त नेत्र तथा अनन्त अवयव सर्वत्र हैं। वह सृष्टि को सभी ओर से आवृत्त किये हुए उसमें परिव्याप्त है और उससे बाहर भी अपने महामहिम अविनाशी रूप में अवस्थित है। वह सब-कुछ जो भूत काल में बन चुका था, वर्तमान काल में बन रहा है और भविष्य काल में बनने वाला है, इस पुरुष का ही रूप है। निखिल ब्रह्माण्ड उसका एक छहोटा-सा अंश है। उसकी अनन्त महिमा सर्वोपरि है। ऐसे हैं तेजस्वी पुरुष देवाधिदेव! उन्हीं से सृष्टि-रचना-विषयक आदि-संकल्प उद्भूत होता है जो बाद में ब्रह्मा, हिरण्यगर्भ या प्रजापति के नाम से जाना जाता है और जिसके द्वारा अन्तरिक्ष में इस विशाल विश्व ने आकार लिया। 'पुरुषसूक्त' समाज के संघटकों की तात्त्विक अविभेद्यता की निश्चित रूप से घोषणा करता है। वैदिक ऋषि मानव और सृष्टि से उतना ही प्रेम करते थे जितना की भगवान् से।

सर्वप्रथम ऋग्वेद के 'नासदीयसूक्त' ने ऋषियों द्वारा सत्ता की थाह लेने की सूचना दी। सापेक्ष द्वारा परम का दिव्य दर्शन इस विश्रुत मन्त्र की प्रकट विषय-वस्तु है। यद्यपि निराकार ब्रह्म समस्त सत्ताओं में सर्वोपरि है और अस्तित्व-सम्बन्धी समस्त कल्पनाओं से अतीत है, तथापि व्यक्ति द्वारा जब इसका चिन्तन किया जाता है तब यह कुछ ऐसा रहस्यमय हो जाता है कि इसके सम्बन्ध में न निश्चित रूप से कुछ कहा जा सकता है और न इसकी कोई परिभाषा ही दी जा सकती है। 'सत्ता' को यहाँ एक ऐसे रूप में चित्रित किया गया है जिसे न 'सत्' से नामोद्दिष्ट किया जा सकता है, न 'असत्' से; क्योंकि आकाश और पृथ्वी के प्रकटीकरण से पूर्व उसका प्रत्यक्ष बोध करने वाला कोई नहीं था। अपने निकट आने के समस्त प्रयत्नों को चुनौती देती हुई, अपनी ही सत्ता में डूबी केवल एक अनिर्वचनीय निश्चल नीरवता थी। किसी प्रकार का वैशिष्ट्य (भेद) न होने के कारण मृत्यु अथवा अमरत्व भी नहीं था। वस्तुतः दिवस और रात्रि भी नहीं थे। अपनी गरिमा और महिमा में स्पन्दित केवल एक सत्ता थी; परन्तु जो उसे देखना चाहते थे, उनको अन्धकार दिखायी देता था। वह अद्वितीय थी, मात्र वही थी। उसी से यह सृष्टि हुई। परन्तु यह सब कैसे घटित हुआ, कोई नहीं जानता; क्योंकि सभी सृष्टि के पश्चात् आये। यह 'नासदीयसूक्त' का केन्द्र-बिन्दु है और इसका विकास उपनिषदों तथा धर्म के उत्तरकालीन शास्त्र-विहित सुस्थित रूप की विविध दार्शनिक तथा धार्मिक विचारधाराओं में हुआ। एक प्रसिद्ध मन्त्र ऋग्वेद उद्घोषित करता है :

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो
दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं
यमं मातरिश्वानमाहुः ॥
(ऋग्वेद :१-१६४-४६)

''सत् एक ही है जिसका वर्णन मनीषी इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, यम, वायु आदि अनेक नामों से करते हैं।'' और, इस प्रकार वह समस्त देवताओं का मात्र एक सत्ता में एकीकरण कर देता है।

ऋग्वेद में अन्य सूक्त भी हैं जो अन्य विविध दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण हैं। 'अस्यवामस्यसूक्त' के अर्थ का रूप बड़ा जटिल है। वह सृष्टि और सृष्टि-रचना के कतिपय मुख्य तथ्यों की ओर संकेत करता है। 'हिरण्यगर्भसूक्त' हिरण्यगर्भ या प्रजापति (जो बाद में सृष्टिकर्ता ब्रह्मा मान लिये गये) से विश्व की उत्पत्ति का गान करता है। 'अघमर्षणसूक्त' वर्णन करता है कि ब्रह्माण्ड में समत्व होता है और उससे सृष्टि का चक्र इस प्रकार चल पड़ता है कि प्रत्येक चक्र में सृष्टि के प्रमुख रूप अपनी पुनरावृत्ति करते हैं। 'वामदेवसूक्त' वामदेव की माँ के गर्भ से ही आत्मिक संसिद्धि-प्राप्ति का एवं जीवत्व के पाश से उन्मुक्त होने के हर्षोद्गार का उल्लेख करता है। ऋग्वेद का समापन-अंश व्यक्तियों के बीच मनसा, वाचा, कर्मणा एकता-स्थापन का प्रेरणादायक आह्वान है, जो आज की मानवता के लिए बहुत बड़ा सार्थक सन्देश है।

यजुर्वेद के एक अध्याय, 'रुद्र अध्याय' अथवा 'शत रुद्री' में रुद्र शिव के रूप में परम सत्ता का रोमहर्षक आह्वान है। इसमें परम सत्ता को समस्त गोचर एवं बोधगम्य रूपों में सम्बोधित किया गया है। छोटा और बड़ा, स्थूल और सूक्ष्म, निम्न तथा उच्च, दूर तथा अनतिदूर, दृश्य तथा अदृश्य, अस्तित्ववान् तथा अनस्तित्ववान्ह्वह्वजो-कुछ है, सब-कुछ सर्वशक्तिमान् भगवान् है। यहाँ शिव को, भगवान् की महत्कृपा के अभिलाषी भक्तों को वर देने वाली सर्वव्यापी सत्ता के रूप में आह्वान करने के सम्बोधन हैं। विश्व की एकता तथा सार्वजनिक कल्याण हेतु पवित्रीकरण की तथा आह्वानात्मक प्रक्रिया-स्वरूप 'पुरुषसूक्त' और 'रुद्र अध्याय' पूजा के अवसरों पर आज भी मन्दिरों में गाये जाते हैं। वैदिक सर्वशक्तिमान् भगवान् में दिव्य सौन्दर्य और तेज **(सुन्दरम्)**, लोकमंगलकारिता और लोक-कल्याण के नियम **(शिवम्)** तथा आध्यात्मिक सत्य एवं पूर्णत्व **(सत्यम्)** सब एक-साथ सन्निहित हैं।

वेदों में गायत्री-मन्त्र अनुपम है। यह उनका बीज-मन्त्र माना जाता है; और मनु के विचारानुसार सृष्टि के प्रारम्भ काल से ही **'भूः भुवः स्वः'** की तीन व्याहृतियों के संग देवत्व के सार्वत्रिक प्राकट्य के लिए 'खुल जा सम सम' समझा जाता है। **(अनूदित)**

अपने समस्त कार्यकलापों का आध्यात्मीकरण करें। ऐसा अनुभव करें कि आप भगवान् के हाथों में एक उपकरण मात्र हैं और समस्त इन्द्रियाँ 'उनकी' ही हैं। इस सूत्र को दोहरायेंह्वह''मैं आपका हूँ, सब-कुछ आपका है, आपकी इच्छा पूरी हो।''

स्वामी चिदानन्द

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

नीति के पाठ २

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

स्वर्णिम नियम

माता-पिता की आज्ञा का पालन करो। सदा सत्य बोलो। कभी असत्य न बोलो। समय का पालन करो। सदा साफ-सुथरे रहो। भले बनो और भला करो। वीर बनो। गरीब और जरूरतमन्द लोगों की सहायता करो। अपना कर्तव्य भली प्रकार पूरा करो।

अपना पाठ ठीक से याद करो। बड़ों का तथा अपने शिक्षक का सम्मान करो। देश की सेवा करो। समाज की सेवा करो। काम मत टालो। कल करने के लिए कुछ भी न छोड़ो। अपना कर्तव्य ठीक से निभाओगे, तो जीवन में विजयी होओगे। सदा बहुत सुखी रहोगे।

सदा फुरतीले रहो। निष्काम सेवा, त्याग और प्रेम को जीवन का लक्ष्य बनाओ। आदर्श जीवन जिओ। नम्र और मृदु बनो। दूसरों की भावनाओं को मत दुखाओ। कटु शब्द कभी न बोलो। मीठा बोलो। बहुत अधिक मत बोलो। किसी की निन्दा न करो। प्रतिदिन कुछ-न-कुछ सेवा करो।

कमाने की क्षमता बढ़ाओ

प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करो। परिश्रमी बनो। सदा सावधान रहो। अपना सर्वांगीण विकास करो। स्वयं भोजन बनाना सीखो। टाइप करना और शार्टहैण्ड-लेखन सीखो। ईमानदारी से व्यवसाय करो। बागवानी और खेती सीखो। घर के पीछे थोड़ी भूमि हो, तो वहाँ साग-सब्जी और फलों के पेड़ लगाओ।

सदा व्यस्त रहो। निरीक्षण की शक्ति का विकास करो। भले लोगों की संगति करो। एक पैसे का भी दुरुपयोग न करो। जब स्वयं रोटी कमा सको, तभी विवाह करो। सुव्यवस्थित और अनुशासित जीवन जिओ। आलस्य, प्रमाद और चुगलखोरी को दूर भगाओ। किसी भी गुट में सम्मिलित न होओ।

फुरसत के समय बच्चों को पढ़ाओ। छोटा-सा कोई उद्योग शुरू करो, जो कमाई का साधन हो और जिसमें ज्यादा पूँजी न लगती हो। कोई अच्छी कमीशन एजेन्सी लो। पैसा-पैसा बचाओ। कला, दस्तकारी, हारमोनियम, वायलिन या गायन सीखो।

जल्दी उठो

मेरी प्यारी राधा, प्रात:काल जल्दी उठो। मेरे प्यारे राम, बिस्तर से उठते ही यह धुन गाओ :

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

अपने माता, पिता और सभी गुरु जनों को दण्डवत् प्रणाम करो।

पाठशाला में जब अपने मित्रों या सहपाठियों से मिलो, तब कहोह्नह्न**'जय राम जी की'** या **'जय कृष्ण जी की'** या **'ॐ नमो नारायणाय'** या **'जय सीताराम'** या **'जय राधेश्याम'**।

अपनी पुस्तकें पढ़ने से पहले भगवान् की स्तुति करो।　　**(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)**

योग द्वारा स्वास्थ्य :

ध्यान

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

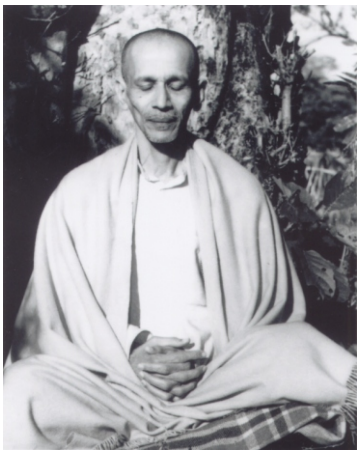

महर्षि पतंजलि के योग-सूत्र के अनुसार ध्यान योग का सातवाँ अंग है, आठवाँ समाधि है। धारणा के अभ्यास की अनेक विधियाँ हैं, जो ध्यान तक ले जाती हैं। ध्येय-पदार्थ के वास्तविक स्वरूप को समझना ही ध्यान का आशय है। मन ही यन्त्र (माध्यम) है, जिसके द्वारा हम ध्यान करते हैं। ध्यान प्रारम्भ करने से पूर्व मन के क्रियाकलाप के स्वरूप का किंचित् अध्ययन आवश्यक है। मन का अस्तित्व केवल अपने क्रियाकलाप के समय ही पाया जाता है। चोर का आभास चोरी की क्रिया के समय ही पाया जा सकता है; क्योंकि अन्य सभी समयों में वह सामान्य व्यक्तियों की भाँति दिखायी देगा। जब चोर को ज्ञात होता है कि पुलिस उसके पीछे लगी है, तो वह अपनी गतिविधियों पर रोक लगा देता है। इसी प्रकार यदि आप मन का अध्ययन प्रारम्भ करते हैं, तो मानसिक प्रक्रियाएँ या गतिविधियाँ कम हो जायेंगी। ध्यान की मुख्यतः दो अवस्थाएँ हैं। वे हैंह्न(१) अन्य सभी विषयों और विचारों का निषेध कर एक विषय या विचार पर लगातार चिन्तन करना, और (२) समस्त विचारों से मन को मुक्त रखना।

प्रथम अवस्था में अभ्यासकर्ता को अपना मन किसी विषय पर केन्द्रित करना चाहिए अथवा गुरु जी के द्वारा दीक्षित मन्त्र के जप में अपने-आपको व्यस्त रखना चाहिए। यदि वह किसी मन्त्र पर एकाग्रता रखते हुए मन्त्र का जप प्रारम्भ करता है, तो उसे उन अन्य असंख्य विचारों की जानकारी प्राप्त होगी, जो उसके अवचेतन और अचेतन मन के तल में डूबे पड़े हैं तथा जो चेतना के ऊपरी तल पर उभर आते हैं और मन्त्र पर एकाग्रता में बाधा उत्पन्न करते हैं। जब मन्त्र पर भाव सहित (अर्थ तथा अनुभूति सहित) एकाग्रता दीर्घ काल के निरन्तर अभ्यास के द्वारा बढ़ जाती है, तो मन ध्यानावस्था को प्राप्त हो जाता है।

द्वितीय अवस्था में अभ्यासकर्ता को सुखासन में बैठना चाहिए। नेत्रों को बन्द करें। पैर की उँगलियों से ले कर शिर की चोटी तक शरीर के सभी अंगों को विश्राम दें। कान खुले रहने से बाह्य ध्वनियाँ स्वभावतः ही उनसे टकरायेंगी। व्यक्ति को इन बाह्य ध्वनियों तथा अन्तःविचारों का भी साक्षी होना चाहिए, जो अन्तहीन अनुक्रम में उठती रह सकती हैं। व्यक्ति को उन अन्तःविचारों के पीछे नहीं पड़ना चाहिए, न उसे बाह्य ध्वनियों पर गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए। बैठ कर किये जाने वाले किसी आसन पर पूर्ण शिथिल हो कर और मन के अन्तः एवं बाह्य क्रियाकलापों पर एक साक्षी-जैसा बना रह कर लगातार दीर्घ काल तक सतत (बिना क्रम भंग किये) अभ्यास के पश्चात् मन निर्विषय बन जायेगा। प्रारम्भिक अवस्थाओं में ध्यान रखना चाहिए कि व्यक्ति निद्रालीन न हो जाये। ध्यानाभ्यास में सफलता के लिए निष्ठा, लगन और विचार, वाणी तथा कर्म की पवित्रता महत्त्वपूर्ण घटक हैं। **(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)**

बाल-स्तम्भ :

भगवान् के बड़े-बड़े हाथ!

स्वामी रामराज्यम्

यह घटना हिमाचल प्रदेश की बाणगंगा नदी में घटित हुई। वैसे तो यह एक छोटी नदी है, परन्तु तेज वर्षा होने पर विकराल रूप धारण कर लेती है। जब यह घटना घटित हुई, उस समय मूसलाधार वर्षा हो चुकी थी। नदी की लहरें पहाड़ी तट से टकरा-टकरा कर छह-छह, सात-सात फुट तक ऊँची उठ रही थीं। कुछ यात्री नदी पार करने के लिए तट पर खड़े थे। मल्लाह नाव खेने के लिए तैयार नहीं थे। थोड़ी देर बाद पानी का प्रवाह थोड़ा कम हुआ। तब मल्लाहों ने कहाह्न ''हम एक बार में केवल चार लोगों को ही ले जायेंगे।'' फिर चार लोगों को बैठा कर एक नाव चल पड़ी। जब नाव नदी के बीचोबीच पहुँची, तब वह एकाएक नदी की धारा के साथ बहने लगी। मल्लाह तो मुस्तैदी से पतवार चला रहे थे, यह अचानक कैसे हो गया! मल्लाह पतवार चलाते-चलाते थकने लगे लेकिन नाव थोड़ा भी तट की ओर नहीं सरकी। वह पानी के प्रवाह के साथ नदी के निचले हिस्से की ओर बहती रही। मल्लाह थक-हार कर बैठ गये। मौत साक्षात् खड़ी थी। नाव पर सवार चारों व्यक्तियों के चेहरे भय से पीले पड़ गये। तट पर खड़े लोग चीखने-चिल्लाने लगे।

तभी एक अनहोनी घटना घटित हो गयी। एक हलके झटके के साथ नाव अपने-आप रुक कर स्थिर हो गयीह्नह्नमानो वह किसी टीले पर खड़ी हुई हो! नाव में सवार सब लोग चकित हो कर एक-दूसरे की ओर देखने लगे। एक मल्लाह दूसरे मल्लाह का हाथ पकड़ कर पानी की थाह लेने के लिए नदी में उतरा। पानी उसकी छाती के कुछ नीचे तक था परन्तु उसका बहाव बहुत तेज था। उसके पैर उखड़े जा रहे थे। तभी दूसरे तट पर खड़े लोगों ने एक रस्सा नाव की ओर फेंका और उसका एक सिरा पकड़े रहे। उस रस्से के सहारे चारों यात्री एक-एक करके पानी में चलते हुए तट तक पहुँच गये। नाव खाली हो गयी, परन्तु फिर भी स्थिर खड़ी रही। पानी का स्तर कम हो जाने पर मल्लाह नाव को तट पर ले आये। अनुमान था कि नाव के नीचे कोई कठोर और भारी वस्तु होने के कारण नाव रुक गयी होगी। मल्लाहों ने वहाँ ढूँढ़ने की कोशिश की लेकिन कुछ भी नहीं मिला। कोई नहीं समझ पाया कि नदी के मध्य तक निर्विघ्न आने के बाद नाव क्यों अनियन्त्रित हो गयी और जल का प्रवाह तेज होने पर भी क्यों स्थिर खड़ी हो गयी।

बच्चो, जब भगवान् बचाना चाहते हैं, तो ऐसे बचाते हैं! सच पूछो, तो वही सब-कुछ करते हैं, वही सब-कुछ करवाते हैं। तेज जल-प्रवाह में उन्होंने ही तो नाव को खड़ा कर दिया था (अन्यथा नाव खड़ी ही नहीं हो सकती थी)! इसलिए अपने कल्याण के लिए भगवान् पर ही भरोसा करना चाहिए। उनके बड़े-बड़े हाथ! उन्हीं के हाथों में अपना जीवन सौंप कर निश्चिन्त हो जाना चाहिए। □ □ □

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

परम पिता परमात्मा की अपार कृपा से तथा परम पूज्य श्री गुरुदेव के अनन्त आशीर्वाद से दिव्य जीवन संघ मुख्यालय अपने ही एक अंग, 'शिवानन्द होम', जो कि लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित है, के द्वारा निरन्तर अपनी विनम्र सेवा में रत है। यह उन निस्सहाय रोगियों को चिकित्सीय सुविधाएँ उपलब्ध करवाता है जो स्थाई तौर पर सड़कों के किनारे ही रहते हैं; किन्तु बीमारी या चोट इत्यादि के समय कुछ समय के लिए उन्हें चिकित्सालय में भरती हो कर इलाज करवाना पड़ता है, ताकि आगे का सड़क के किनारे ही बीतने वाला जीवन फिर से चलता रख सकें। ऐसे लोगों को अच्छा स्वस्थ जीवन जीने की सुविधाएँ सपना ही रहती हैं, क्योंकि न तो मौसम के अनुकूल वस्त्र इनके पास हैं, न ही उसके लिए कोई वित्तीय सहायता है। वह तो ''श्रद्धा और सबूरी'' का समर्पित तथा विश्वासपूर्ण जीवन जीते हैं; बहते प्रवाह में दृढ़ता से अपने पैर धरती पर जमाये हुए, शान्त मन से परम पिता की प्रेमपूर्ण हल्की-सी फुसफुसाहट सुनने को आतुर हृदय-पटों को फैला कर खोले हुए!

इस माह एक प्रौढ़ भद्र पुरुष भरती हुआ जो कुछ समय पूर्व सड़क पर दुर्घटनाग्रस्त हुआ था। आश्रम मुख्यालय के निकटवर्ती क्षेत्र से इसे लाया गया था, स्वयं अपने सम्बन्ध में कुछ भी बता सकने में असमर्थ था; किन्तु जैसी कातरता से चीख रहा था, उससे आभास होता था कि वह शारीरिक और मानसिक दोनों ही प्रकार से गहरी चोट खाये हुए है। उसके गहरा संक्रमित घाव था जिसमें कीड़े रेंग रहे थे। टाँग की हड्डी टूटी हुई थी और बाहर निकल आयी थी। वह न तो चल सकता था, न ही टाँग या नितम्ब हिला सकता था। उसके शैया-व्रण (बैड-सोर) हो चुके थे जिनकी स्थिति कोथपूर्ण (गैंगरीन वाली) हो चुकी थी। चिकित्सीय सुविधा तथा उपयुक्त आहार से, एवं परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की सुरक्षापूर्ण, सान्त्वना-प्रदायक, प्रेमपूर्ण एवं स्वास्थ्य-प्रदाता शक्ति से उसकी दशा में सुधार हो रहा है। जय गुरुदेव!

कुछ अन्य रोगी, जो पहले के भरती किये हुए थे, पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ करके छुट्टी पा गये हैं। जय गुरुदेव!

एक दीर्घकालीन अन्तेवासी, इस माह शरीर छोड़ कर विदाई ले गया। वह केवल तपेदिक का ही गम्भीर रोगी नहीं था, दीर्घ काल से उसका एक गुर्दा भी बेकार हो चुका था। 'शिवानन्द होम' में प्रवेश पाने से पहले उसके पेट की कई बार शल्यक्रिया हो चुकी थी तथा रक्त-प्रवाह दूषित होने के कारण उसकी एक टाँग भी बेकार हो चुकी थी। प्रातःकाल ही उसने अन्तिम साँस ले कर शरीर छोड़ दिया।

आइए, उसकी आत्मा की परम शान्ति एवं सद्गति के लिए प्रार्थना करें। हरि शरणम्, हरि शरणम्, हरि शरणम्!

''हे प्रभु, हम पर कृपा करें, प्रार्थना है कि आपकी कृपा का हममें निवास हो, वही हममें कार्यरत हो और हमारी अन्तिम श्वास तक हममें ही रहे। जो आपकी इच्छा हो, वही हमारी भी इच्छा हो! हमारी इच्छा पूर्णरूपेण आपकी ही इच्छा के अनुकूल रहे!''

(द इमिटेशन ऑफ़ क्राइस्ट', थौमस ए कैम्पिस)

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दे! रोगियों की सेवा करें। यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

मुख्यालय आश्रम में दृष्टि दान यज्ञ

परम पावन गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने कहा हैह्न ''मानवता की सेवा ही सच्ची प्रभु-पूजा है।'' इस

दिव्योक्ति से प्रेरित हो कर, गत अनेक वर्षों की ही भाँति इस बार भी शिवानन्द मिशन, वीरनगर ने दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के सहयोग से शिवानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय, शिवानन्दनगर, ऋषिकेश में श्री स्वामी याज्ञवल्क्यानन्द जी महाराज (डा. अध्वर्यु जी) की पावन-स्मृति में ३ अक्तूबर से १० अक्तूबर २००९ तक नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित किया।

नेत्र शिविर का शुभारम्भ परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज (उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ) तथा परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज

(महासचिव, दिव्य जीवन संघ) के शुभाशीर्वाद से हुआ। इस समय के बीच शिवानन्दनगर एवं ऋषिकेश के आस-पास के ग्रामीण और पर्वतीय क्षेत्रों में १४ जाँच शिविर आयोजित किये गये थे, जिनमें १७९४ रोगियों की जाँच शिविर के दौरान ही चिकित्सा की गयी। ३९२ रोगियों के नेत्रों की शल्य-क्रिया की गयी तथा लैंस डाले गये। यह शल्य-क्रिया सौराष्ट्र सैंट्रल हास्पिटल, वीरनगर के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त एवं समर्पित सेवानिष्ठ सी. एम. ओ. डाक्टर सी. एल. वर्मा तथा ऋषिकेश के प्रतिष्ठित डाक्टर चित्रासिंह द्वारा सम्पन्न की गयी। आश्रम द्वारा सभी रोगियों एवं उनके सहायकों को निःशुल्क भोजन तथा आवासीय सुविधाएँ उपलब्ध करायी गयीं।

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय श्रीमती स्नेहलता बेन

शुक्ला के उदारतापूर्ण दान के प्रति, श्री विक्रम भट्ट जी तथा अन्य भक्तों के प्रति, शिवानन्द मिशन, वीरनगर की समर्पित भावनाओं पूर्वक की गयी सेवाओं के प्रति, मेडिकल तथा पैरा मेडिकल स्टाफ के प्रति, राजकोट शाखा के स्वयंसेवकों के प्रति, आश्रम के चिकित्सालय के स्टाफ के प्रति तथा इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए अन्य सभी प्रकार से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्बन्धित व्यक्तियों के प्रति अत्यन्त आभार व्यक्त करता है। परम पिता परमात्मा की अहैतुकी कृपा, परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम वन्दनीय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के भरपूर आशीर्वाद सभी पर हों!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

मुख्यालय आश्रम में वेद पारायण

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय आश्रम में परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पावन-स्मृति में १४ अक्तूबर से २० अक्तूबर २००९ तक, सप्त दिवसीय वेद पारायण कार्यक्रम आयोजित किया गया। बद्री भक्त वेद विद्यालय के दो ब्रह्मचारीह्नह्नश्री महेश मुले तथा श्री कृष्ण मिश्रा ने यह वेद पारायण किया।

१४ अक्तूबर से १९ अक्तूबर तक श्री विश्वनाथ मन्दिर में शुक्ल यजुर्वेद संहिता की माध्यन्दिनी शाखा का मूल पारायण किया गया। १५, १९ और २० अक्तूबर २००९ को पावन समाधि मन्दिर में रात्रिकालीन सत्संग में संहिता एवं सतपथ ब्राह्मण में से चयनित मन्त्रों का पारायण भी किया गया। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने विभिन्न खण्डों का संक्षिप्त परिचय दिया। आश्रम के ब्रह्मचारी, संन्यासी, साधक एवं भक्तोंह्नह्नसभी ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। पावन वैदिक मन्त्रों के भक्तिपूर्ण, भावमय पारायण ने समस्त वातावरण में एक अनोखी अवर्णनीय तरंगें भर दीं। इन दिव्य तरंगों ने एक अद्‌भुत शान्ति और आनन्द बिखेरते हुए सभी को प्राचीन वैदिक काल की अनुभूति करा दी।

दोनों ब्रह्मचारियों को परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, उपाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ तथा परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, महासचिव, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय द्वारा सम्मानित किया गया।

मुख्यालय आश्रम में दीपावली, गो-पूजा तथा गोवर्धन-पूजा महोत्सव

१७ अक्तूबर २००९ को ज्योति-पर्व दीपावली के शुभ अवसर पर मुख्यालय आश्रम रंग-बिरंगे विद्युत् बल्बों तथा दीपकों के प्रकाश से जगमगा उठा। सायंकालीन सत्संग में समाधि हाल में स्मृद्धि एवं सौभाग्य की देवी माँ लक्ष्मी की भव्य पूजा की गयी। दैनिक भजन-कीर्तन-प्रार्थना के साथ-साथ देवी माँ की विशेष स्तुतियाँ, स्तोत्र तथा भजन-कीर्तन किये गये और साथ ही कनकधारा-स्तोत्र एवं अष्टोत्तरशत-नामार्चना भी की गयी। इस पावन वेला में दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने आशीर्वचन दिये। आरती तथा विशेष प्रसाद वितरण से सत्संग सम्पूर्ण हुआ।

आगामी दिवस १८ अक्तूबर को आश्रम की विश्वनाथ गोशाला में गो-पूजा तथा गोवर्धन-पूजा की गयी। स्मृद्धि एवं सम्पन्नता की देवी महालक्ष्मी माता के प्रत्यक्ष प्रकटीकृत रूप गोमाताओं का पूजन किया गया और उन्हें खाद्य-पदार्थ दिये गये। सत्संग, भजन-कीर्तन, गोमाता और भगवान् श्री कृष्ण की आरती तथा उसके पश्चात् आनुष्ठानिक प्रीतिभोज कार्यक्रम के विशेष अंग रहे।

ईश्वर की प्रार्थना प्रारम्भ में स्वार्थ-भाव से की जाती है, लेकिन बाद में वह निःस्वार्थ बन जाती है और साधक के मन को पवित्र करती है। **स्वामी शिवानन्द**

श्री स्कन्द-षष्ठी महोत्सव

भगवान् स्कन्द की असुर शक्तियों पर भव्य विजय-प्राप्ति की द्योतक स्कन्द-षष्ठी का महोत्सव मुख्यालय आश्रम में १९ अक्तूबर से २४ अक्तूबर २००९ तक अत्यन्त साज-सज्जा एवं धूमधाम से मनाया गया। समस्त कार्यक्रम भजन हाल में स्थित स्कन्द भगवान् के मन्दिर में सम्पन्न हुआ।

प्रथम पाँच दिन वैदिक मन्त्रों सहित अभिषेक, अलंकार-पुष्पार्चना हुई तथा भजन-कीर्तन हुए। भव्य आरती और विशेष प्रसाद वितरण के साथ पूजा सम्पूर्ण हुई। पाँचों दिन नित्य सायंकाल में स्कन्द भगवान् के स्तुति-गायन में भजन-कीर्तन का कार्यक्रम भी होता था।

२४ अक्तूबर २००९ को स्कन्द-षष्ठी के दिन प्रातः कावड़ी शोभा-यात्रा गंगा घाट पर स्थित गणेश मन्दिर से प्रारम्भ हुई और भजन-कीर्तन गाते हुए भजन हाल पहुँची। वहाँ उनका अति उल्लासपूर्वक स्वागत करने के उपरान्त भगवान् का अभिषेक, अर्चना और आरती हुई। स्कन्द भगवान् के छह मुखों के प्रतीक स्वरूप छह कुमारों की पूजा की गयी, उन्हें भोजन, उपहार और दक्षिणा भेंट की गयी। पावन प्रसाद वितरण से पूजन सम्पन्न हुआ।

स्कन्द भगवान् के आशीर्वाद हम सब पर हों जिससे कि हम संसार की आसुरी शक्तियों तथा अज्ञान पर विजय प्राप्त कर सकें!

सूचना

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल साधना शिविर

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल का वार्षिक साधना शिविर २७ से ३१ जनवरी २०१० तक मानव सेवा ट्रस्ट कॉम्प्लैक्स, हामिरागाच्छी, रेलवे स्टेशनह्वह्वमालिया, पश्चिम बंगाल में होगा।

पंजीकरण राशि रु. ३००/- प्रति व्यक्ति।

नामांकन प्राप्त करने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर २००९। नामांकन के लिए फ़ार्म श्री विजय स्वाँई, ४ सी मेहेर अली मंडल स्ट्रीट, मोमिनपुर, कोलकाताह्वह्व७०० ०२७, पश्चिम बंगाल को भेजने होंगे।

नामांकन तथा अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

श्री सी. बी. सहगल, मो. नं. ०९८३०१ ४४१४७; श्री नितुल पारिख, मो. नं. ०९८३०० ४०७३०; श्री विजय स्वाँई, ०९३३९३९२८४५; डा. पी. के. सामन्तरे, मो. नं. ०९००२०८०५१४।

सभी भक्तों से निवेदन है कि शिविर में भाग लें। **द डिवाइन लाइफ सोसायटी**

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

बबनपुर (उड़ीसा): माह सितम्बर २००९ में शाखा कीह्नह्नसाप्ताहिक सत्संग, साप्ताहिक पादुका-पूजा, दो चल-सत्संग आदि नियमित गतिविधियों के उपरान्त 'प्रथम पुण्यतिथि आराधना' के अवसर पर, माह अगस्त के दिनांक १६, १७ को २४ घण्टों का अखण्ड संकीर्तन, जप, ध्यान, साधना-मार्गदर्शन, पादुका पूजा, विशाल नगर-संकीर्तन, रात्रि-सत्संग, नारायण-सेवा तथा १२०० छात्रों को बिस्कुट आदि का वितरण सम्पन्न हुए।

बड़कुँआल (उड़ीसा): शाखा की दैनिक और नियमित गतिविधियाँह्नह्नप्रार्थना, स्तोत्रपठन सहित द्विवार पूजाएँ, भागवतम् पर प्रवचन, प्रति गुरुवार पादुका पूजा, सत्संग, 'शिवानन्द दिन' को पादुका पूजा। प्रथम पुण्यतिथि आराधनाह्नह्नब्राह्ममुहूर्तीय ध्यान, सहस्रार्चना सहित पादुका पूजा, श्रीमद्भगवद्गीता-पारायण, श्री गंगा-आरती और सान्ध्य-सत्संग सहित ५ दिवसीय साधना-कार्यक्रम।

बेंगुलूरु, टस्कर टाउन (कर्नाटक): शाखा द्वारा 'चिदानन्द जयन्ती' को नारायण-सेवा सम्पन्न हुई तथा कुष्ठ रोगियों की एक संस्था के १५० निवासियों को खाद्यान्न-पैकेट, फल, बिस्कुट, वस्त्र, कैश का वितरण किया गया।

बरबिल् (उड़ीसा): शाखा ने 'शिवानन्द भवन' में साप्ताहिक सत्संग, भक्तों के निवासों में साप्ताहिक चल-सत्संग तथा 'चिदानन्द दिन' को 'मासिक साधना दिन' के अतिरिक्त, (१) श्री कृष्ण जयन्तीह्नह्नश्री कृष्ण-जन्म पूजा तथा प्रसाद-सेवन सहित दिनभर के कार्यक्रम। (२) प्रथम पुण्यतिथि आराधनाह्नह्न आदरणीय श्री स्वामी असीमानन्द जी के ४ दिवसीय प्रवचन और 'पुण्यतिथि-दिन को' ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान, १२ घण्टों का अखण्ड महामन्त्र-कीर्तन, पादुका पूजा, गीता-पाठ, वस्त्र-वितरणयुक्त नारायण-सेवा, प्रसाद-सेवन, सान्ध्य-सत्संग आदि आयोजित किये गये।

बारिपदा (उड़ीसा): शाखा की प्रति रविवार को पादुका पूजा, दिनांक २ अगस्त तथा ६ नवम्बर को 'मासिक साधना दिन' की गतिविधियों के आधिक्य में, श्री कृष्ण जयन्ती, प्रथम पुण्यतिथि-दिन, 'शिवानन्द दिन', 'चिदानन्द दिन' को पादुका पूजा सम्पन्न हुई। दो चल-सत्संग आयोजित हुए। 'शिवानन्द जयन्ती' को वृद्धाश्रम में विशेष सत्संग, 'चिदानन्द जयन्ती' को मूक तथा बधिरों के स्कूल में विशेष सत्संग और बिस्कुटों के पैकेटस् का वितरण किया गया। उभय अवसरों पर नारायण-सेवा हुई। श्री कृष्ण जयन्ती को ८० निर्धन जनों को, पुण्यतिथि को ५० बालकों को तथा गणेश-चतुर्थी को १०० निर्धन व्यक्तियों को अन्नदान किया गया।

बल्लारि (कर्नाटक): दैनिक पूजा और सत्संग के अतिरिक्त प्रति रविवार को पादुका पूजा एवं प्रथम पुण्यतिथि, शिवानन्द जयन्ती तथा चिदानन्द जयन्ती को विशेष पादुका पूजा और शिवानन्द जयन्ती को एक आध्यात्मिक प्रवचन आयोजित किये गये।

भवानीपटना (उड़ीसा): शाखा के साप्ताहिक द्विवार सत्संग, दो चल-सत्संग तथा दिनांक ३० अगस्त के विशेष सत्संग के आधिक्य में प्रति माह 'शिवानन्द दिन' को पादुका पूजा, श्री कृष्ण जयन्ती को पादुका पूजा एवं विशेष सत्संग सम्पन्न हुए। प्रथम पुण्यतिथि के कार्यक्रमों में पादुका पूजा, नारायण-सेवा और स्वाध्याय समाविष्ट थे।

भिलाई (छत्तीसगढ़): शाखा की नियमित गति-विधियाँह्नह्नदिनांक २ अगस्त को मासिक पादुका पूजा और सत्संग, मातृ-सत्संगह्नह्नप्रति मंगलवार, शुक्रवार तथा एकादशी तिथियों को स्तोत्र-पाठ। पादुका पूजा, सब भक्तों द्वारा अर्चना, प्रसाद-सेवन सहित भिलाई तथा नेहरूनगर शाखा के संयुक्त कार्यक्रम 'शिवानन्द जयन्ती' को और जगन्नाथ-मन्दिर में 'चिदानन्द जयन्ती' को समान कार्यक्रम आयोजित हुए।

भीमकाण्ड (उड़ीसा): शाखा द्वारा परिचालित दैनिक पादपूजा तथा साप्ताहिक सत्संगों के अतिरिक्त शाखा के 'शिवानन्द जयन्ती' के कार्यक्रमों में पादुका पूजा, प्रभातफेरी, हवन और नारायण-सेवा तथा 'चिदानन्द जयन्ती' पादुका पूजा तथा निर्धनों को नये वस्त्रों का वितरण आदि समाविष्ट थे।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश): शाखा के निज श्री मुरली कृष्ण के मन्दिर के निर्माण कार्य का प्रथम भागह्नह्नप्राथमिक अंश पूर्ण होने से, प्रथम पुण्यतिथि को, उसी मन्दिर में, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ, गुरु-पूजा और भजन-कीर्तन आयोजित हुए। शाखा ने दस दिवसीय 'श्री गणेश महोत्सव' भी दैनिक पूजा, भजन-कीर्तन इत्यादि सहित मनाया।

भुज (गुजरात): शाखा ने स्वयं, आध्यात्मिक प्रवचनों तथा स्वाध्याय सहित चार सत्संग तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की पावन-स्मृति में, अन्य दो सेवार्थी संस्थाओं की संयुक्तता में निःशुल्क दन्त-यज्ञ आदि सम्पन्न किये। १०३ मरीजों के उपचार के पश्चात् निःशुल्क औषधि-वितरण किया गया। शाखा द्वारा शाखा के संस्थापक-परमाध्यक्ष, ९५ वर्षीय श्री जमियतराम वोरा को श्रद्धांजलि देने एक विशेष सभा आयोजित हुई।

बीकानेर (राजस्थान): शाखा की दैनिक द्विवार पूजाएँ, सत्संग के आधिक्य में स्तोत्र-पाठ सहित पाक्षिक मातृ-सत्संग सम्पन्न किये। 'शिवानन्द जयन्ती' और 'चिदानन्द जयन्ती' के कार्यक्रमों में पादुका पूजा (उपस्थित सब भक्तों के अभिषेक-अर्चना सहित), प्रवचन, भजन, कीर्तन, आरती, प्रसाद आदि समाविष्ट थे। नवरात्रि में विशेष पूजा, ९ दिवसीय श्री रामायण के तथा श्री दुर्गा सप्तशती के पारायण, दैनिक विशेष पूजा, समापन के दिन कन्या-पूजन आदि मुख्यतः सम्पन्न किये गये। दैनिक योगासन-वर्ग, निर्धन छात्रों को आर्थिक सहाय तथा शिवानन्द पुस्तकालय द्वारा सेवाएँ चलती रहीं।

चेन्नै, वाषरमेन पेट (तमिल नाडु): शाखा ने 'शिवानन्द जयन्ती' मनाने के लिए एक जाहिर कार्यक्रम-उत्सव आयोजित किया, जिसमें गुरु-पूजा स्तोत्र-पठन, भजन, आरती तथा प्रसाद प्रमुख कार्यक्रम थे।

घाटपदमुर, जगदालपुर (छत्तीसगढ़): शाखा की ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा, प्रभातीय सभा तथा ३० मिनटों के संकीर्तन के पश्चात् सान्ध्य-सत्संग तथा प्रति रविवार को पादुका पूजा, सुन्दरकाण्ड पारायण तथा स्तोत्र-पाठ आदि नियमित गतिविधियों के उपरान्त 'चिदानन्द जयन्ती' को पादुका पूजा और एक घण्टे का संकीर्तन आयोजित हुए। अनन्त चतुर्दशी को, ११ दिवसीय कार्यक्रम की समाप्ति में गणेश पूजा तथा आधा घण्टा संकीर्तन किया गया। श्री रामायण तथा श्री दुर्गा सप्तशती के नवाह्न पारायण सहित नवरात्रि के कार्यक्रमों में, अन्तिम दिन को कन्यापूजन, हवन तथा ३ घण्टों का अखण्ड संकीर्तन सम्पन्न हुए।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): शाखा की नियमित गतिविधियों की सुचारु सम्पन्नता सहित विशेष गतिविधियाँह्न (१) पादुका पूजन और ३ घण्टों के कीर्तनयुक्त'चिदानन्द जयन्ती'। (२) नवरात्रिह्नविशेष पूजा, 'दुर्गा सप्तशती' का पाठ, १२ घण्टों का अखण्ड संकीर्तन, समापन में हवन, कन्यापूजन तथा भण्डारा।

गुड़गाँव (हरियाणा): शाखा की, साप्ताहिक सत्संग, मातृ सत्संग, स्तोत्र-पारायण, एकादशी के कार्यक्रम, पूर्णिमा को कथा, भजन-कीर्तन, माह के अन्तिम रविवार को भण्डारा तथा प्रति माह २०० से अधिक मरीजों के उपचारयुक्त 'शिवानन्द चैरिटेबल क्लीनीक' आदि नियमित गतिविधियाँ हैं। विशेष गतिविधियों मेंह्न(१) पादुका पूजा, प्रवचनों, श्री सुन्दरकाण्ड पारायण तथा प्रसाद-सेवन सहित गुरुपूर्णिमा। (२) विशेष कार्यक्रमोंयुक्त आराधना-दिन। (३) श्री कृष्ण जयन्तीह्न भजन-कीर्तन, मध्यरात्रि की आरती तथा प्रसाद आदि हैं।

जाजपुर रोड (उड़ीसा): शाखा द्वारा दैनिक पूजा और साप्ताहिक सत्संग की सम्पन्नता के साथ-साथ 'शिवानन्द दिन' को विशेष पाद-पूजा और नारायण-सेवा तथा 'शिवानन्द जयन्ती' को ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना सभा, पाद-पूजा, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का जप, नारायण-सेवा तथा विशेष सान्ध्य-सत्संग आयोजित हुए। 'चिदानन्द जयन्ती' के कार्यक्रमों में प्रभातीय ध्यान, 'ॐ नमो नारायणाय' मन्त्र का जप, पादुका पूजा, भजन-कीर्तन, नारायण-सेवा, प्रसाद-सेवन, सन्ध्या में वीडियो कैसेट सत्संग, निर्धनों को कम्बलों का वितरण, एक मेडिकल कैम्प में आर्थिक सहाय इत्यादि समाविष्ट थे।

जयपुर (उड़ीसा): शाखा की दैनिक द्विवार पूजाएँ, साप्ताहिक एवं चल-सत्संग, 'शिवानन्द दिन' का उत्सव आदि नियमित गतिविधियों के उपरान्त, 'प्रथम पुण्यतिथि' के कार्यक्रमों में ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, प्रभातफेरी, पादुका पूजा, पूज्य स्वामी जी के जीवन-चरित्र में से पठन, प्रवचन, ब्राह्मणों, अकिंचन बालकों तथा स्थानिक अनाथालय के ३० अन्तेवासियों को भोजन और १२० प्रतिभागियों द्वारा प्रसाद-सेवन आदि समाविष्ट थे। 'श्री कृष्ण जयन्ती' को सत्संग, पूजा, हवन, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का संकीर्तन, भगवद्गीता का पाठ, श्रीमद् भागवतम् से पठन, मध्यरात्रि में आरती और ६० भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन आदि सम्पन्न हुए।

काकिनाडा, माधवपत्तनम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा के दो घण्टों के साप्ताहिक सत्संग एवं 'शिवानन्द जयन्ती' और 'चिदानन्द जयन्ती' को विशेष कार्यक्रमों का आयोजन, होमियोपैथिक औषधालय द्वारा समाज-सेवा सुचारु रूप से सम्पन्न हुए।

कंटाबाँजी (उड़ीसा): शाखा ने प्रति रविवार को नियमित रूप से 'भगवद्गीता' के स्वाध्याय सहित सत्संग सम्पन्न किये।

खातिगुडा (उड़ीसा): शाखा के साप्ताहिक, एकादशी सत्संग सुन्दर रूप से पूर्ण होते हैं तथा दिनांक २ अगस्त को १२ घण्टों का महामन्त्र कीर्तन, नारायण-सेवा और दिनांक ९ अगस्त को एक चल-सत्संग भी अयोजित हुए। 'प्रथम पुण्यतिथि' के कार्यक्रमों में ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा, महामन्त्र-कीर्तन सहित प्रभातफेरी, पादुका पूजा, भण्डारा, १२ घण्टों का अखण्ड मन्त्र-जप तथा सान्ध्य-सत्संग आदि समाविष्ट थे।

केउनझरगढ़ (उड़ीसा): शाखा के प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संगह्नह्नअन्तिम रविवार की प्रभातीय पाद पूजा और सान्ध्य चल-सत्संगह्नह्नसहित चलते रहे। दिनांक २१ सितम्बर को एक विशेष चल-सत्संग एवं ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा, प्रभातीय पादुका पूजा, स्वाध्याय, भजन तथा प्रवचन सहित सान्ध्य-सत्संग 'शिवानन्द जयन्ती' तथा 'चिदानन्द जयन्ती' को ह्नह्नये शाखा के विशेष सत्संग रहे।

खुर्दा रोड, जटनी (उड़ीसा): शाखा द्वारा दैनिक सत्संग के आधिक्य में ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, स्वाध्याय, पादुका पूजा, प्रवचन, सब प्रतिभागियों द्वारा प्रसाद-सेवन, आदि कार्यक्रम 'शिवानन्द जयन्ती', 'चिदानन्द जयन्ती' को; श्री गुरु पूर्णिमा, आराधना-दिन और प्रथम पुण्यतिथि को तथा आराधना-दिन को भजन-सन्ध्या आदि आयोजित किये गये। दिनांक १७ से दिनांक २३ सितम्बर पर्यन्त अन्तिम दिन के हवन सहित श्रीमद् भागवत सप्ताह एवं दिनांक ९ से १६ सितम्बर पर्यन्त, दैनिक ३ घण्टों का सत्संग और भजन आदि विशेष गतिविधियाँ आयोजित की गयीं। उपरोक्त सब ही कार्यक्रमों में नारायण-सेवा की गयी।

मोईरंग (मणिपुर): शाखा ने प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संगों के अतिरिक्त, २०० तालीमार्थियों युक्त, योगासन-तालीम-वर्ग पूर्ण माहभर आयोजित किये। शिवानन्द जयन्ती, श्री कृष्ण जयन्ती, राधाष्टमी तथा श्री वामन जयन्ती को विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा के दैनिक प्रभातीय सभा और सान्ध्य-सत्संग, साप्ताहिक चल-सत्संग, उभय एकादशी के चल-सत्संग, प्रति माह दिनांक ३ का ६ घण्टों का अखण्ड महामन्त्र कीर्तन नियमित रूप से चलते रहे। विशेष गतिविधियाँह्नह्न(१) शिवानन्द जयन्ती : त्रिदिवसीय कार्यक्रमों में दिनांक ६ सितम्बर को दूर से आने वाले १३ विद्वानों द्वारा 'रामचरित मानस' की विशेषताएँ बतलाती १२ घण्टों पर्यन्त 'श्री मानस गोष्ठी'; दिनांक ७ को 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्रयुक्त १२ घण्टों का अखण्ड जप, और 'शिवानन्द जयन्ती' को प्रातः एक घण्टे की सभा के पश्चात् तीन घण्टों की अवधि पर्यन्त नगर संकीर्तन-यात्रा; हवन; प्रवचन; अस्पताल के मरीजों को फल-वितरण तथा ५०० भक्तों के लिए मध्याह्न-भोजन आयोजित हुए। 'चिदानन्द जयन्ती' को हवन और भजन-कीर्तन, एवं नवरात्रि-पूजा के उपलक्ष्य में दैनिक भजन-कीर्तन, हवन, कन्या-पूजन और ५० भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन सम्पन्न हुए।

नई दिल्ली, स्वामी शिवानन्द कल्चरल एसोशिएसन : दैनिक गतिविधियाँह्नह्नसमूह प्रार्थना, प्रभात में प्राथमिक शाला के छात्रों को नैतिक शिक्षा, सान्ध्य योगासन-ध्यान वर्ग। विशेष कार्यक्रमह्नह्नप्रथम पुण्यतिथि को परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज की पावन उपस्थिति तथा डा. विश्वामित्र जी महाराज, श्रीमती मोहिनी गिरी माता जी की मुख्य अतिथि रूप में उपस्थिति थी। कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन, प्रवचन, भण्डारा, प्रसाद और वृन्दावन में २०० निराधार विधवा स्त्रियों को भोजन आदि समाविष्ट थे। 'शिवानन्द जयन्ती' को पादुका पूजन, भजन-कीर्तन और प्रसाद सम्पन्न हुए।

रायगढ़ (छत्तीसगढ़): शाखा के नियमित साप्ताहिक सत्संगों के आधिक्य में प्रथम पुण्यतिथि को कुछ महानुभावों तथा अनेक भक्तों ने परम पूज्य स्वामी जी महाराज को अति भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी। 'शिवानन्द जयन्ती' और 'चिदानन्द जयन्ती' को विशेष कार्यक्रम हुए। पादुका पूजा, गुरु-पूजा; ध्यान, भजन-कीर्तन तथा प्रवचन आदि कार्यक्रम 'चिदानन्द जयन्ती' को सम्पन्न हुए।

रायपुर (छत्तीसगढ़): साप्ताहिक तथा उभय एकादशी के सत्संगों की नियमित सम्पन्नता के आधिक्य में, शाखा ने : (१) श्री गणेश चतुर्थी विशेष पूजा और भजन के साथ, (२) प्रथम पुण्यतिथि विशेष कार्यक्रमों युक्त, (३) शिवानन्द जयन्ती प्रातः ध्यान-संकीर्तन, कुष्ठरोगियों की एक संस्था में फल-वितरण तथा विशेष सान्ध्य-सत्संग सहित, (४) चिदानन्द जयन्ती प्रातःध्यान, संकीर्तन, प्रभातीय पादुका पूजा, सायंकाल में, आध्यात्मिक प्रवचनों और भजनों के साथ मनाये।

राउरकेला (उड़ीसा): शाखा द्वारा दैनिक प्रातःध्यान, योगासन-वर्ग, प्रभातीय पादुका पूजा, शिवानन्द आश्रम में सान्ध्य-सत्संग, साप्ताहिक चल-सत्संग, पाद-पूजा सहित शिवानन्द-दिन, पाद-पूजा और विशेष सत्संग सहित चिदानन्द-

दिन के कार्यक्रम, दिनांक ३० अगस्त को दृष्टिहीन (अन्ध) छात्रों के विद्यालय में मासिक साधना-दिन के रूप में नियमित गतिविधियाँ सम्पन्न हुईं। उक्त विद्यालय में एक डाक्टर-भक्त ने छात्रों के चिकित्सीय परीक्षण के पश्चात् उनके आवश्यक उपचार किये। प्रति रविवार को होमियोपैथिक औषधालय द्वारा मरीजों के इलाज किये। विशेष गतिविधियों में : (१) प्रथम पुण्यतिथि को प्रभातफेरी, पादुका पूजा, गुरु-भजन, परम पूज्य स्वामी जी महाराज को श्रद्धांजलि, सामूहिक नारायण-सेवा, (२) श्री कृष्ण जयन्ती को पादुका पूजा, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप, हवन, भजन-कीर्तन, मध्यरात्रि की आरती तथा प्रसाद आदि आयोजित किये गये।

साउथ बलण्डा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियों के उपरान्त शाखा ने 'शिवानन्द जयन्ती' की १७ दिवसीय विशेष आध्यात्मिक गतिविधियों में प्रभातफेरी, प्रातः ध्यान, प्रभातीय पाद पूजा, तीन घण्टों का सान्ध्य-सत्संग, एक कुष्ठरोगियों की संस्था में तथा द्वितीय अन्ध-मूक-बधिर छात्रों के स्कूल में स्वास्थ्य-कैम्प; सितम्बर के दिनांक ९ से दिनांक १५ पर्यन्त नारद भक्ति सूत्रों पर साढ़े तीन घण्टों के प्रवचन; दिनांक १६ को 'श्री हनुमान चालीसा' के पाठ, दिनांक १७ को प्रभातीय पादुका पूजा, ३ घण्टों का अखण्ड महामृत्युंजय मन्त्र-जप; दिनांक १८ को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र-पारायण, दिनांक १९ को १२ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड संकीर्तन; दिनांक २० से २३ पर्यन्त श्रीमद् भागवतम् के दशम और एकादश स्कन्धों के पठन तथा उनके विषयक प्रवचन आदि समाविष्ट थे। चिदानन्द जयन्ती को प्रातः प्रभातफेरी और ध्यान, पादुका पूजा, तीन घण्टों पर्यन्त 'गुरुदेव स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जीवन तथा उपदेशों' विषयक प्रवचनों, २५० भक्तों द्वारा मध्याह्न-भोजन तथा परम पूज्य स्वामी जी की इस शाखा की मुलाकात विषय में वीडियो-शो।

सुनाबेडा (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियों में, सप्ताह में द्विवार सत्संगों में परम पूज्य स्वामी जी महाराज के साहित्य का विस्तृत अध्ययन किया गया एवं आदरणीय श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी की मुलाकात पर एक विशेष सत्संग आयोजित हुआ। श्री कृष्ण जयन्ती को ९ घण्टों के पूजा, जप, स्तोत्रपाठ सहित कार्यक्रम; प्रथम-पुण्यतिथि को प्रभातफेरी, पादुका पूजा, हवन, २०० निराधारों हेतु नारायण-सेवा, स्कूल के सब छात्रों को प्रसाद-वितरण आदि सम्पन्न हुए। तदुपरान्त श्री गणेश चतुर्थी, ऋषि पंचमी और राधा अष्टमी को विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए।

सुनाबेडा, महिला शाखा (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्लह्लदैनिक प्रभातीय गतिविधियाँ, सान्ध्य आध्यात्मिक कार्यक्रम, साप्ताहिक द्विवार सत्संग, बाल-सत्संग, नारायण-सेवा तथा उभय एकादशी को आध्यात्मिक कार्यक्रम। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल (१) श्री गुरु पूर्णिमा का उत्सव। (२) श्रावण माह की अवधि में 'श्री रामायण' का माहभर पारायण। (३) श्री कृष्ण जयन्ती : प्रातः ध्यान, द्वादश अक्षरों के मन्त्र का १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप, संकीर्तन, स्तोत्र-पाठ और श्री गोपाल सहस्रनाम का पाठ, श्रीमद् भागवतम् में से पावन जन्मयुक्त पठन, अभिषेक, अर्चन तथा मध्यरात्रि में आरती। (४) प्रथम पुण्यतिथि : प्रातःकालीन ध्यान, सहस्र नामोंयुक्त अर्चना, नारायण-सेवा, मिठाइयों तथा पेन का वितरण, प्रसाद-सेवन, सायंकालीन जाहिर कार्यक्रम में आदरणीय श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी का प्रवचन। (५) महासमाधि-दिन : दिनांक २८ अगस्त को 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का १२ घण्टों पर्यन्त अखण्ड जप।

वडोदरा (गुजरात): शाखा ने साप्ताहिक सत्संग, 'शिवानन्द दिन' और 'चिदानन्द दिन' को पादुका पूजा और मन्त्र-जप, प्रथम और चतुर्थ रविवारों को मार्गदर्शनलक्षी ध्यान तथा अन्य तीन रविवारों को 'ईशावास्य उपनिषद्' विषयक ग्रुप-चर्चा आदि नियमित परिचालित किये। प्रथम पुण्यतिथि को : पादुका पूजा, १५ कि. मी. के अन्तर पर स्थित कुष्ठरोगियों की एक संस्था में सत्संग और भोजन वितरण, शाखा में सान्ध्य-सत्संग। सामाजिक सेवाएँ : सप्ताह में चार दिन होमियोपैथिक तथा सप्ताह में दो दिन आयुर्वेदिक चिकित्सालय की सेवाएँ, सरकारी अस्पताल में निर्धन मरीजों को औषधियों का वितरण और एक्युप्रेशर उपचार।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा ने द्विसाप्ताहिक सत्संग; चल-सत्संग; परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की मुलाकात पर दिनांक ३० सितम्बर को एक विशेष सत्संग जिसमें उनका प्रवचन हुआह्लह्लआदि सम्पन्न करके 'शिवानन्द जयन्ती' और 'चिदानन्द जयन्ती' को पादुका पूजा और सत्संग आयोजित किये।

विक्रमपुर (उड़ीसा): शाखा द्वारा दैनिक प्रभातीय आध्यात्मिक कार्यक्रम, साप्ताहिक सत्संग, साप्ताहिक मातृ-सत्संग, माह सितम्बर में पाँच सुअवसरों पर पादुका पूजा तथा दिनांक २५ सितम्बर को 'श्रीमद् भगवद्गीता पारायण' आदि सम्पन्न हुए। विशेष गतिविधियाँ : (१) दिनांक २० सितम्बर को समस्त अंगुल जिले के १५० भक्तों की प्रतिभागितायुक्त विशेष

साधना-दिन का आयोजन। (२) शिवानन्द जयन्ती को प्रभातफेरी, 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का ६ घण्टों का अखण्ड जप। (३) 'चिदानन्द जयन्ती' को प्रभातफेरी आदि। (४) श्री भागवत जयन्ती को विशेष पूजा और हवन।

विशाखपत्तनम् (आन्ध्र प्रदेश) : नियमित गतिविधियाँह्वह्वदैनिक प्रातःकालीन भजन-संकीर्तन; साप्ताहिक सान्ध्य-सत्संग; दैनिक योगासन-वर्ग, साप्ताहिक निःशुल्क चिकित्सीय परीक्षण, गीता के तीन अध्यायों के पाठ, पूर्णिमा को ध्यान। विशेष गतिविधियाँह्वह्व(१) गुरु पूर्णिमा : ७० भक्तों द्वारा पादुका पूजा और व्यास पूजा, नारायण-सेवा। (२) प्रथम पुण्यतिथि : विशेष सत्संग, भजन-कीर्तन, मन्त्र-जप, स्तोत्रों के पाठ। (३) शिवानन्द जयन्ती : पादुका पूजन, भजन-कीर्तन, प्रवचन, प्रसादह्वह्व८० भक्तों से भी अधिक भक्तों ने कार्यक्रमों में उपस्थिति दी।

विदेशी शाखाएँ

हांगकांग (चीन) : शाखा का मासिक सत्संग दिनांक ११ जुलाई, द्वितीय शनिवार को सम्पन्न हुआ, जिसमें १ घण्टा महामृत्युंजय जप करने के पश्चात् 'गुरुदेव के उपदेश' विषयक श्री हरि चेंग जी का प्रवचन हुआ; सत्संग में ४७ प्रतिभागी थे। शेष शनिवारों को, ३६ प्रतिभागियों के मध्य १ घण्टे का महामन्त्र कीर्तन किया गया। माह जुलाई में २८२ और माह जून में २५१ प्रतिभागियों के लाभ में, नियमित रूप से, श्वसन का तकनीक तथा ध्यान सहित योगासन-वर्ग सम्पन्न हुए। योग के कार्य-शिविर में, १२ प्रतिभागियों को चार सत्रों में प्राणायाम का तकनीक सिखाया गया। पठन-वर्ग में ५५ प्रतिभागियों को श्री हनुमान चालीसा सिखाये गये। शाखा ने ७७ प्रतिभागियों युक्त दिव्य जीवन संघ का ९ वाँ वार्षिक दिन मनाने में दिनांक १३ जून को एक 'Yoga Gala' आयोजित किया।

मॉरीशस, रोज़ हिल : नियमित गतिविधियाँह्वह्वसप्ताह में चार दिन सत्संग, दैनिक योगासन-वर्ग, शिवानन्द-दिन के कार्यक्रम। शाखा ने गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की १२२ वीं जन्म-जयन्ती मनाने में ५ उत्सव आयोजित किये : (१) दिनांक ६ सितम्बर को महेबौर्ग में; (२) दिनांक ८ को शिवानन्द आश्रम में पादुका पूजन तथा अकिंचनों को भोजन; (३) दिनांक ९ को श्री शिवानन्द राजकीय माध्यमिक शाला में तथा स्वामी शिवानन्द सरकारी स्कूल में पुस्तकों का वितरण; (४) दिनांक १२ को 'शिवानन्द स्वास्थ्य-केन्द्र' में कार्यक्रम; (५) दिनांक १३ को प्रवचनों, पुस्तकों और महाप्रसाद के वितरण के साथ उत्सव का समापन हुआ।

श्री दुर्गा पूजा गतिविधियाँ : दिनांक १९ सितम्बर से दिनांक २६ सितम्बर पर्यन्त प्रातःकाल में पूजा, अपराह्न में श्री देवी-माहात्म्य पारायण, सत्संग और सायंकाल में भजन-कीर्तन। दिनांक २७ को पूर्णाहुति कार्यक्रम और महाप्रसाद।

SPECIAL ANNOUNCEMENT

With effect from 28.09.2009, Vijaya Dasami Day, the Rates of Audio CDs, Audio CDs (Twin), Video CDs and DVDs are revised as under.

1. Audio CDs	**Rs. 50/- each**
2. Audio CDs (Twin)	**Rs. 90/- each**
3. Video CDs	**Rs. 60/- each**
4. Video CDs (Twin)	**Rs. 110/- each**
5. DVDs	**Rs. 60/- each**

—The Divine Life Society

ज्ञान-गंगा

हम जितना ही अपने पास ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करें, उतना ही हम अपने को निर्भय अनुभव करेंगे।

आपका हृदय सुपावन मन्दिर है। इसमें भगवान् की प्रतिष्ठा कीजिए।

शान्ति और सुख केवल सत्संग के परिणाम हैं।

जब ईश्वर के प्रति अनुराग बढ़ता है, तब भक्त कुछ और नहीं चाहता; वह केवल ईश्वर का सान्निध्य चाहता है।

ईश्वर जब आप पर कृपावान् बनता है, तो अपने को आपके गुरु के रूप में प्रकट कर देता है।

ईश्वर अपने भक्त के प्रारब्ध को अपने ऊपर ले लेता है।

अपनी भलाई के लिए किया गया काम 'बन्धन' है, जब कि बहुजनहिताय किया गया काम सब बन्धनों से 'मुक्ति' के लिए है।

कोई काम जो हम जान-बूझ कर करते हैं, अनजाने में आदतों का जनक होता है।

स्वामी शिवानन्द